सविनय अवज्ञा आन्दोलन में किसानों की भूमिका : एक अध्ययन

डॉ. नेहा कुमारी

गांवों में अपना आधार घटता देख कांग्रेस अपनी साख वापस पाने के लिए एक तरफ जमींदारों को यह आश्वासन दे रही थी कि वह उनके हितों को नुकसान नहीं पहुंचने देगी और दूसरी तरह रैयतों से कह रही थी कि वे अच्छे हाथों (कांग्रेस) में हैं। 1936 में पी.सी.के.ई.सी के पास जमींदारी प्रथा समाप्त करने तथा लगान और जंगल पर अधिकार संबंधी समस्याओं का हल निकालने के लिए लगातार प्रतिवदेन आते रहे। लगान भुगतान न करने के भी कई मामले सामने आए। क्योंकि लोगों को यकीन था कि कांग्रेस मामले का निपटारा अवश्यकरेगी।

महत्वपूर्ण बात यह है कि सहजानंद सरस्वती ने यह समझ कायम कर ली थी कि लगान विरोधी अभियान को सरकार निश्चित रूप से दबा देगी। इसके बाद कांग्रेस अकेले (किसान सभा को साथ लिए बिना) लगान भुगतान न करने का आंदोलन शुरू करेगी। ध्यान देने योग्य बात यह है कि सरकार भले ही यह मानती थी कि कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन के साथ–साथ लगान विरोधी आंदोलन नहीं छोड़ेगी, फिर भी कभी–कभी ऐसा हो जाने की संभावना से वह चिंतित हो उठती थी। इसलिए सरकार ने युनाईटेड पार्टी का पूरा समर्थन दिया।